

नीम बाबा

एस. आई. फ़ारूक़ी

चित्रांकन

पार्थ सेनगुप्ता



ISBN 978-81-237-5371-3

पहला संस्करण : 2008
चौथी आवृत्ति : 2014 (*शक 1936*)

Neem Baba *(Hindi)*

₹ 35.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

नेहरू बाल पुस्तकालय

नीम बाबा

एस.आई. फ़ारूकी

चित्रांकन

पार्थ सेनगुप्ता



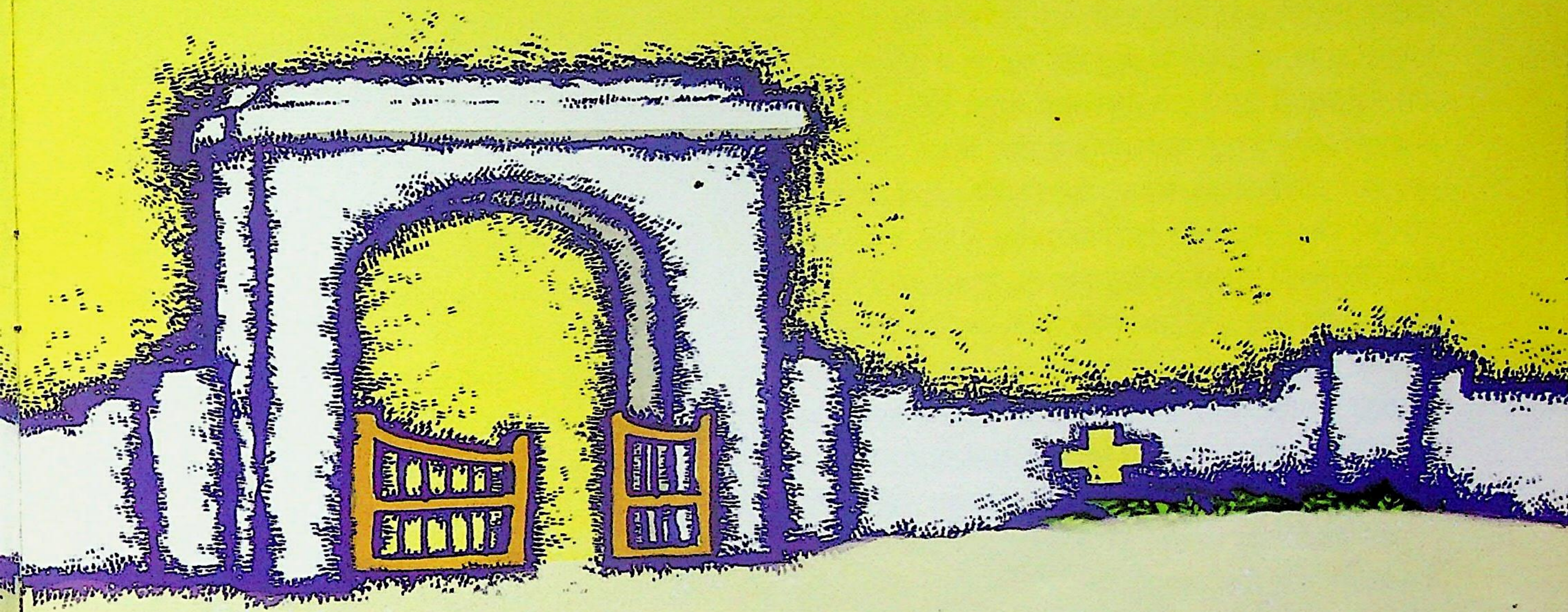
nbt.india

एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

NATIONAL BOOK TRUST, INDIA





अंबर स्कूल से लौटी तो घर में घुसते ही ठिठककर रह गई। घर कुछ बदला-बदला सा था। थोड़ा बड़ा और कुछ खुला-खुला सा। रोशनी भी ज्यादा थी। मगर साथ ही एक आजीब सी वीरानी का एहसास भी हो रहा था। उसे समझने में ज्यादा देर नहीं लगी। नीम का हरा-भरा पेड़ अब आंगन में नहीं था। पूरे आंगन में और घर के बाहर उसकी पत्तियां और शाखाएं बिखरी पड़ी थीं जो शायद बड़ी-बड़ी डालों और शाखाओं को बेदर्दी से घसीटकर ले जाते वक्त टूट गई थीं। तने की जगह पर जमीन खुदी हुई थी क्योंकि पेड़ काटने वालों ने उसकी जड़ें तक खोदकर निकाल दी थीं। हां, एक बड़ी सी डाल अब भी आंगन के एक कोने में पड़ी थी जिसे हो सकता है कि अम्मां ने जलाने के विचार से रख लिया हो।

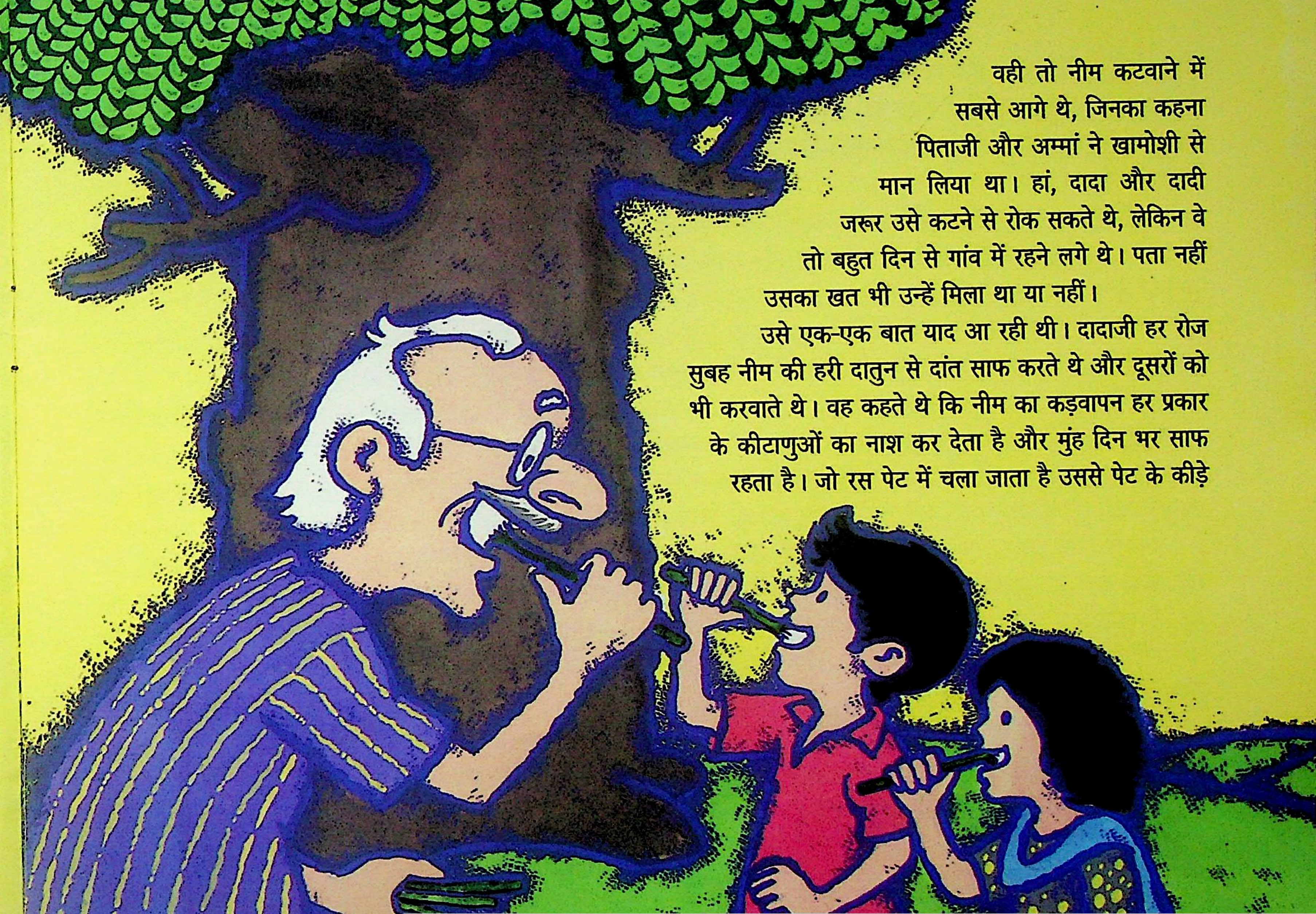
उसे अपना घर नीम के बिना बिलकुल उजड़ा हुआ लगा। पीड़ा से आंखें भर आईं। नीम का पेड़ उसे बहुत प्यारा था। जब से होश संभाला था, उसे यूं ही देखती चली आई थी। इसी के साये में खेद-कूदकर इतनी बड़ी हुई थी। आज भी नीम के नीचे बैठने में उसे जो मजा आता था, वह कमरे के अंदर मोटे गद्दों पर न मिलता था। बरसात के मौसम में जब नीम की मोटी डाल पर झूला डाला जाता तो ठंडी-ठंडी हवा में झूलना उसे बहुत भला लगता था। अब तो खैर वह तेरह साल की हो गई थी, मगर जब छोटी थी तब गर्मियों की दोपहर में अपने भैया के साथ चुपके से बाहर निकल जाती थी। भैया पड़ोस में जाकर उसकी सहेली गीता और अपने दोस्त रूफी को बुला लाता और फिर सब मिलकर नीम की घनी छांव में खेलते हुए दोपहर से शाम कर देते। हर वर्ष दिसंबर, जनवरी के महीनों में उसके पत्ते पीले होकर झड़ जाते। फिर मार्च अप्रैल में नई कोंपलें फूटतीं और पूरा पेड़ सफेद रंग के छोटे-छोटे फूलों से लद जाता जिनकी भीनी-भीनी सुगंध अब भी उसके मन में बसी हुई थी। फूलों से निबोलियां बनतीं जो आरंभ में हरी होतीं, लेकिन बरसात आते-आते पककर पीली हो जातीं। हवा चलती तो निबोलियां टप-टप नीचे गिरतीं जिन्हें सब बच्चे बहुत शौक से खाया करते।

अंबर को नीम के कट जाने का बहुत दुख हुआ था जिसके कारण आज उसने दोपहर का खाना भी नहीं खाया। वह एक बार फिर से आंगन में आई। पहले तो बहुत देर तक उस जगह खामोश खड़ी रही जहां पहले नीम का पेड़ था, फिर वहां से हटकर उस डाल के पास आई जो कोने में पड़ी थी। वह प्यार से मोटी डाल पर हाथ फेरती रही और फिर न जाने क्या सोचकर उसी के पास लेट गई। कटी हुए डाल के पास लेटने से उसके मन को बहुत शांति मिली।

वहां लेटे-लेटे उसे घरवालों की बातें याद आने लगी जो वह कई दिनों से सुन रही थी। पिताजी, अम्मां और बड़े भैया चाहते थे कि नीम का पेड़ काट दिया जाए क्योंकि वह बिना कारण ही जगह घेरे हुए था। योजना यह थी कि इस स्थान पर एक कमरा बनवाया जाए ताकि बाहर के बरामदे से लगा हुआ जो कमरा था उसे खाली कर के ड्रांइग-रूम बनाया जा सके।

अंबर एक तो खुद बहुत खामोश स्वभाव की थी और दूसरे घर वाले उसे छोटा समझते हुए किसी बात में बोलने नहीं देते थे। इसीलिए वह सब कुछ सुनकर भी खामोश थी। कई बार उसके मन में आया कि भैया को खत लिखकर अलीगढ़ से बुलवा ले या फिर गांव से दादाजी को। उन्हें तो सचमुच उसने खत लिख भी दिया था। लेकिन इससे पहले कि वे आते, बेचारा नीम का पेड़ जड़ से काट दिया गया था।

वह सोच रही थी कि अपना दुख किससे कहे। भैया जो उससे चार साल बड़ा था पढ़ने के लिए अलीगढ़ चला गया था। यदि होता भी तो शायद ही कुछ कर पाता। अब तो जब गर्मी की छुट्टियां होंगी तभी आएगा। और बड़े भैया उनसे कहने का भला क्या लाभ,



वही तो नीम कटवाने में सबसे आगे थे, जिनका कहना पिताजी और अम्मां ने खामोशी से मान लिया था। हां, दादा और दादी जरूर उसे कटने से रोक सकते थे, लेकिन वे तो बहुत दिन से गांव में रहने लगे थे। पता नहीं उसका खत भी उन्हें मिला था या नहीं।

उसे एक-एक बात याद आ रही थी। दादाजी हर रोज सुबह नीम की हरी दातुन से दांत साफ करते थे और दूसरों को भी करवाते थे। वह कहते थे कि नीम का कड़वापन हर प्रकार के कीटाणुओं का नाश कर देता है और मुंह दिन भर साफ रहता है। जो रस पेट में चला जाता है उससे पेट के कीड़े

मर जाते हैं। सर्दियां खत्म होने पर जब गर्म कपड़े बक्सों में रखे जाते तो दादी मां उनके बीच में नीम की पत्तियां जरूर रखतीं। वह कहती थीं कि इनके असर से कपड़ों में कीड़ा नहीं लगता। मगर अब ये बातें कोई नहीं सुनता। अधिक मूल्य के सुगंध वाले टूथपेस्ट से दांत साफ किए जाते हैं और कपड़ों में बदबूदार जहरीली फिनायल की गोलियां रखी जाती हैं। यदि कोई नीम के प्रयोग की बात कहे तो उसे पुराने जमाने का समझा जाता है।

अंबर का मन बहुत बोझिल हो रहा था। उसने सोचा क्यों न अपनी सहेली गीता के पास हो आए। उससे बातें कर के मन कुछ शांत होगा। गीता का ध्यान आते ही उसे बहुत दिन पहले की एक बात याद आ गई। एक दिन गीता उसके घर आई और हाथ जोड़कर नीम के आगे खड़ी हो गई। नीम का पेड़ तो खुद अंबर को भी बहुत प्यारा था, परंतु इस प्रकार एक पेड़ के आगे हाथ जोड़ना उसे अच्छा नहीं लगा। उसने दादाजी से शिकायत की तो उन्होंने समझाया, "बेटी, हिंदू लोग नीम के पेड़ को बहुत पवित्र समझते हैं। उनका विचार है कि जब आसमान में देवी देवताओं के लिए धरती से अमृत ले जाया जा रहा था तब उसकी कुछ बूंदें नीम के पेड़ पर गिर गईं और तभी से उसमें बहुत से ऐसे गुण पैदा हो गए कि उसे पवित्र समझा जाने लगा। नए वर्ष के पहले दिन ये लोग उसकी पत्तियां खाते हैं और उन्हें पानी में उबालकर उससे नहाते हैं। उनका विचार है कि ऐसा करने से वे सारा साल बीमारियों से सुरक्षित रहेंगे।"

यही सब सोचते हुए उसे नींद आने लगी। उसकी आंखें बोझिल हो रही थीं कि अचानक उसके कानों में एक गंभीर मगर प्यार भरी आवाज आई, "ऐ अच्छी लड़की, दुखी न हो, संसार की यही रीत है। एक आता है तो दूसरा जाता है।"

अंबर ने हैरान होकर अपने आसपास देखा, वहां कोई न था। फिर नजर जरा दूर गई तो देखा कि जहां नीम का पेड़ था वहां एक बूढ़ा बाबा खड़ा था। उसकी दाढ़ी और सिर के बाल चांदी की तरह सफेद थे और मुख पर कोमलता थी। सब से ज्यादा अजीब बात यह थी कि उसके कपड़े नीम के पत्तों के थे। उसने अंबर को अपनी ओर देखते पाया तो बोला, "बेटी, शायद तुमने मुझे पहचाना नहीं। मैं तुम्हारा पुराना नीम हूं। तुम मेरे ही साये में खेल-कूदकर इतनी बड़ी हुई हो। कटने के बाद मैं बदल गया हूं। अब तुम मुझे 'नीम बाबा' कह सकती हो।"

इसी बीच अंबर उठकर उसके पास पहुंच चुकी थी, मगर उसे यह देखकर बहुत हैरानी हो रही थी कि जिसे इतनी बुरी तरह से काटा गया था, वह अपने मुख पर मुस्कान लिए ऐसे खड़ा था जैसे कुछ हुआ ही न हो। अंबर ने उससे कहा, "नीम बाबा! तुम्हारे साथ जो अत्याचार हुआ, मुझे उसका बहुत अफसोस है। काश मैं तुम्हारे लिए कुछ कर पाती। पर मैं तुम्हें इतना शांत देखकर बहुत हैरान

हूं। क्या तुम्हें अपने काटे जाने का कोई दुख नहीं है?''

''भला इसमें दुख की क्या बात है! प्रत्येक जीव जो इस संसार में आया है, एक दिन खत्म होने वाला है। दुख उन्हें होता है जो अपना जीवन बेकार में गंवाते हैं, जिनसे दूसरों को सुख नहीं सदा दुख ही मिलता है। परंतु जो अपना जीवन दूसरों की सेवा में बिताए, भला उसे मरने का क्या दुख! वह तो मरकर भी सफल कहलाएगा।''

बूढ़े बाबा की इस बात ने जादू सा काम किया और पल भर में अंबर के मन को बदलकर रख दिया। कितनी शक्ति और साहस था बूढ़े की बातों में और कितनी सच बात कही थी उसने। नीम बाबा के जीवन पर उसे सचमुच ईर्ष्या होने लगी। वह बोली, ''नीम बाबा, तुम कहते तो ठीक हो, मगर फिर भी एक हरे-भरे पेड़ को यूं काट देना क्या ठीक था? हमारे खेलने-कूदने और झूलने का न सही, लेकिन यह विचार तो कर लिया होता कि तुमसे सब लोगों को कितनी साफ हवा मिलती है।''

''अच्छी लड़की, मुझे तुम्हारी बात सुनकर बहुत खुशी हुई। तुम वास्तव में एक समझदार लड़की हो और मुझे पूरी आशा है कि तुम बड़ी होकर संसार में बड़े-बड़े काम करोगी। तुम्हारे घर वालों को कमरा बनाने के लिए जमीन की जरूरत थी, इसलिए उन्होंने मुझे काट दिया। मगर सचमुच समझदारी तब थी, जब ऐसा करने से पहले उन्होंने कम से कम दो पेड़ किसी दूसरी जगह पर लगा दिए होते। यदि पेड़ केवल कटते रहे और लगाए नहीं गए तो एक दिन मनुष्य का अपना जीवन ही खतरे में पड़ जायेगा।'' यह कहकर बूढ़े बाबा ने बड़े प्यार से अंबर का हाथ पकड़ा और बोला, ''चलो बेटी, बार पार्क में चलते हैं। वहां की साफ हवा में तुम्हारी तबीयत भी बदल आएगी और मैं तुम्हें अपनी कहानी भी सुनाऊंगा जो जीवन में तुम्हारे बहुत काम आयेगी।''

बूढ़ा और अंबर घर से बाहर निकले और सड़क पार करके पार्क में आ गए। पार्क के उत्तरी किनारे पर नीम का एक पुराना पेड़ था। दोनों उसके सामने हरी घास पर बैठ गए। बाहर निकलकर अंबर के मुंह पर ताजगी आने लगी थी। पार्क की ताजी हवा में उसने एक गहरी सांस ली और बोली, ''हां, नीम बाबा, तो फिर सुनाओ अपनी कहानी।''

''मेरी कहानी बहुत पुरानी है। मुझे ठीक से याद नहीं, मगर अब से लाखों साल पहले मैंने इस धरती पर जन्म लिया था। उन दिनों यहां का वातावरण बहुत साफ-सुथरा था। जिधर देखो हरे-भरे जंगल नजर आते थे। मनुष्य तो उस वक्त पैदा भी नहीं हुआ था और इसीलिए हमारे काटे और जलाए जाने का कोई भय न था। बहुत थोड़े समय में मेरे बीज जमीन पर दूर-दूर तक फैल गये और कुछ ही सालों में हमारी संख्या बहुत बढ़ गई।''

"नीम बाबा, तुम्हारा जन्म धरती के किस भाग में हुआ था?" अंबर ने पूछा।

"ठीक-ठीक बताना तो जरा कठिन है क्योंकि उन दिनों अलग-अलग देश तो थे नहीं। मगर जहां तक याद पड़ता है मेरा जन्म आज के म्यांमार या भारत के ऊपरी भाग में किसी जगह हुआ था। बस यह समझ लो कि यह वह जगह थी जहां शिवालिक पहाड़ों का सिलसिला फैला हुआ है। लेकिन कुछ ही समय बाद मेरी संतान भारत के एक किनारे से दूसरे किनारे तक फैल गई। अपने बच्चों को इतनी बड़ी संख्या में देखकर मन में इच्छा पैदा हुई कि भारत से आगे बढ़कर दूसरे देशों की सैर भी करनी चाहिए।"

"परंतु प्रत्येक देश का वातावरण तो भारत जैसा है नहीं। कहीं अधिक ठंड है तो कहीं बहुत गर्मी, फिर भला तुम्हारी समझ में यह क्यों नहीं आया कि तुम्हारी संतान को दूसरे स्थानों पर कठिनाइयां भी हो सकती हैं?" अंबर ने पूछा।



"बेटी, इतने बड़े भारत में इतनी आसानी से फैल जाने के बाद अपने सख्त जान होने का अभ्यास तो हो ही चुका था, इसलिए मन कहता था कि हमें किसी भी जगह जीवन गुजारने में कठिनाई नहीं होगी। म्यांमार, श्रीलंका, बांग्लादेश और पाकिस्तान तो भारत जैसे ही थे, लेकिन मेरी संतान को तो ईरान, अफगानिस्तान, मलेशिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड, सूडान और नाईजीरिया तक फैलने में भी कोई कठिनाई नहीं हुई। आगे चलकर जब मनुष्य ने धरती पर अपने कदम जमाना और एक जगह से दूसरी जगह आना-जाना और बसना शुरू किया तो मैं भारतीयों के साथ अफ्रीकी देशों में भी पहुंच गया और आज तक वहां मजे में जीवन गुजार रहा हूं। अब तो समझ लो कि पूर्व में सोमालिया से लेकर पश्चिम में मोरिटीयाना तक मेरी संतान का नियंत्रण है। इसके अतिरिक्त फीजी के द्वीप हों या उत्तरी महासागर के, त्रिनिदाद हो या वेस्ट इंडियन द्वीप, यहां तक कि मिडिल और उत्तरी अमेरिका के बहुत से देशों तक में हमारा बोलबाला है।



तुम्हें शायद यह जानकर हैरानी हो कि मक्का के बाहर अरफात के मैदान में हमारे पचास हजार बच्चों की एक पूरी फौज पहुंच चुकी है जो हज के समय हाजियों को आराम पहुंचायेगी।"

"वास्तव में तुम्हारी हिम्मत और साहस की तो प्रशंसा की जानी चाहिए कि धरती के इतने बड़े हिस्से पर तुमने अपना अधिकार जमा लिया है। अच्छा, एक बात तो बताओ तुम्हें यह 'नीम' जैसा छोटा और प्यारा सा नाम भला किन लोगों ने दिया था?"

"नाम का किस्सा भी बहुत दिलचस्प है। भारत मेरी जन्मभूमि है। यहां के लोगों ने जो नाम मुझे दिए, वे भी कम सुंदर नहीं थे। उन्होंने मुझे अरिष्टा, निम्बा, और निम्बाका कहकर पुकारा। ये नाम संस्कृत भाषा के हैं। इन नामों में अरिष्टा सबसे पुराना नाम है जिसका अर्थ है रोगों से मुक्ति दिलाने वाला। भारत से बाहर निकलने के बाद मेरा पहला पड़ाव म्यांमार में था। वहां के लोगों ने अपनी बर्मी भाषा में मुझे एक नया नाम 'टमाका' दिया। इसके बाद तो समझो नामों की भरमार हो गई। अब तो मेरे इतने ज्यादा नाम है कि मुझे खुद भी ठीक से याद



नहीं। लेकिन जिस नाम से आज संसार के अधिकतर लोग मुझे जानते हैं वह नीम ही है और यह नाम ईरानियों की देन है।''

''अरे वाह! मैं तो समझती थी कि यह नाम हिंदी भाषा का होगा।''

''हिंदी में तो मुझे केवल 'निम्ब' करते हैं। भारत की अनेक भाषाओं में भी मेरे जो नाम रखे गए, उनमें से अधिकतर में हिंदी या संस्कृत नामों की छवि मिलती है। उदाहरण के लिए असमिया, बांग्ला, पंजाबी और कोंकणी में मेरा नाम केवल 'निम' है। मैं गुजराती में 'लीम्बा', सिंधी में 'निमोरी', तेलुगु में 'नम्बामोंद', मराठी में 'निम्बे' और ओड़िया में 'निमूं' कहलाता हूं। हां, उर्दू भाषा ने फारसी का 'नीम' ही अपना लिया है। इनके अतिरिक्त मेरा एक वैज्ञानिक नाम 'एजेडिरेखता इंडिका' भी है। स्थानीय नामों से तो लोग मुझे पहचानने में धोखा खा सकते हैं, लेकिन इस नाम से कभी गलती नहीं होती। मैं अपने इस वैज्ञानिक नाम के लिए मुसलमान राजाओं को धन्यवाद देता हूं।''



“भला वह कैसे?” अंबर ने हैरान होते हुए पूछा।

“बात यह है कि जब मुस्लिम बादशाह भारत आएं तो उन्होंने देखा कि जो पेड़ उनके देश में बहुत आम था वह भारत की धरती पर भी बहुत आजादी के साथ उग रहा था। यह देखकर उन्होंने हमें ‘आजाद दरख्ते हिंदी’ कहना शुरू कर दिया। आगे चलकर जब वैज्ञानिकों ने जीवाणुओं को उस समय की वैज्ञानिक भाषा लेटिन में नाम देने का चलन शुरू किया, तब उसके अनुसार ‘आजाद दरख्ते हिंदी’ बदल कर ‘आजादरख्ता इंडिका’ बन गया और अब यही मेरा अंतरराष्ट्रीय नाम है जिसके द्वारा संसार के किसी भी भाग में मुझे आसानी से पहचान लिया जाता है।”

“नीम बाबा, तुम सचमुच बहुत भाग्यशाली हो कि संसार के इतने ज्यादा देशों में तुम्हारा नाम प्रचलित है।” अंबर ने कहा।

“बेटी, नाम तो काम के साथ जुड़ा है। बहुत से पेड़-पौधे ऐसे भी हैं जिनके बारे में कोई जानने की कोशिश नहीं करता, लेकिन हम से क्योंकि इंसानों को बहुत से फायदे हैं, इसलिए हर कोई हमें जानता है। इंसान जैसे-जैसे हमारे बारे में ज्यादा जानकारी हासिल करता जा रहा है, उसकी नजर में हमारी कीमत उतनी ही बढ़ती हा रही है। आज तो हमारा स्वागत ऐसे-ऐसे नामों से किया जाने लगा है कि हमारी छाती गर्व से फूल जाती है।”

‘नीम बाबा, वे कौन से नाम हैं, जरा मुझे भी बताओ।” अंबर ने पूछा।

“ये नाम असल में खिताब हैं जो संसार के विभिन्न वैज्ञानिकों ने हमारी खूबियों को देखते हुए दिए हैं जैसे ‘पेड़ों में बेहतर पेड़’, ‘कुदरत की कड़वी नेमत’, ‘मनुष्य के लिए कुदरत का तोहफा’, ‘हर अवसर के लिए काम का पेड़’, ‘स्वच्छता देने वाला पेड़’। हमारे कुछ तारीफ करने वालों ने तो हमें ‘जादुई पेड़’ और ‘इक्कीसवीं शताब्दी का पेड़’ तक कह दिया।”

“इसका मतलब तो यह हुआ नीम बाबा कि इंसानों को तुमसे केवल इतना ही लाभ नहीं है कि तुम्हारी दातुन से दांत साफ कर लिए या पत्तियों से गर्म कपड़ों की रक्षा कर ली, बल्कि लगता है कि वे तुमसे इनसे कहीं अधिक महत्वपूर्ण काम लेते हैं। क्या तुम उनके बारे में मुझे नहीं बताओगे?”

“जरूर बताऊंगा बेटी क्योंकि उन्हें सुनकर ही तो तुम्हें मेरी उपयोगिता का ठीक-ठीक ज्ञान होगा और साथ ही यह भी पता चलेगा कि मनुष्य भी कितना महान है।”

“भला इसमें मनुष्य की महानता कहां से आ गई?” अंबर ने हैरानी से पूछा।

"देखो भाई, प्रकृति ने मेरे अंदर बहुत सी खूबियां भर दी हैं मगर उन्हें खोज कर कौन अपने प्रयोग में ला रहा है? इंसान! है न! और इसीलिए अगर हम महान हैं तो हमारे गुणों की खोज करने वाला भी महान ही कहा जाएगा।"

वास्तव में बात बिलकुल ठीक थी, इसलिए अंबर ने सिर हिलाकर 'हां' कहा और नीम बाबा के कारनामे सुनने के लिए संभलकर बैठ गई। नीम बाबा ने कहना शुरू किया, "एक जमाना था जब न तो हमें अपने गुणों का ज्ञान था और न ही मनुष्य उन्हें जानता था। मगर समय के साथ उसे पता लगता गया कि हमारे अंदर कुछ ऐसी खूबियां छुपी हुई हैं जिनके कारण बीमारियां दूर भाग जाती हैं, पागल अच्छे हो जाते हैं और आम लोग हमारे पास रहने से ज्यादा स्वस्थ हो जाते हैं। इन बातों ने जहां एक ओर कुछ लोगों को अंधविश्वासों में डाल दिया, वहीं दूसरी ओर सूझ-बूझ वालों को विज्ञान द्वारा हमारे गुणों की खोज पर उकसाया।"

यह सुनकर अंबर को गीता वाली बात याद आ गई। अब उसकी समझ में आ रहा था कि विज्ञान में इतनी प्रगति होने के बाद भी अभी बहुत से लोगों में अंधविश्वास किस तरह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलते आ रहे हैं और कुछ लोग तो उन्हें धार्मिक रंग भी दे देते हैं।

नीम बाबा ने एक पुराने नीम के पेड़ की तरफ इशारा करते हुए आगे कहा, "इस नीम के तने में वह खोखली जगह देख रही हो न। यह दो डालों के अलग-अलग होने और फिर दोबारा मिल जाने की वजह से बनी है। एक जमाने से यह मशहूर है कि अगर मनोरोगियों को हमारी किसी ऐसी खोखल से गुजारा जाए तो उनका पागलपन ठीक हो जाता है। इसी तरह कर्नाटक के एक गांव के लोग जो कोरामाज कहलाते हैं अजीब तरह से हमारी पूजा करते हैं। वे आपस में चंदा करके पीतल का एक प्याला खरीदते हैं जिसमें हमारी पत्तियां और नारियल रख देते हैं। ऊपर से फूल डालते हैं और संदल का पानी छिड़कते हैं। इसके बाद इस प्याले को तीन दिन के लिए किसी छायादार जगह पर रख दिया जाता है। इस बीच ये लोग खूब दावतें करते हैं और बकरे और मुर्गे काटकर शिवा की बेटी को चढ़ाते हैं। बाद में यह प्याला पानी में फैंक दिया जाता है। इसी से मिलती-जुलती रस्में भारत के दूसरे हिस्सों में भी मनाई जाती हैं जो खाटस-थापन कहलाती हैं। लोगों का खयाल है कि ऐसा करने से बीमारी और दुर्भाग्य को दूर किया जा सकता हे। कुछ लोगों का यह विचार भी है कि हमारी पत्तियों से हवा देने से कई तरह की जानलेवा बीमारियों का इलाज किया जा सकता है।"

"नीम बाबा, पत्तियों का इस्तेमाल तो अंधविश्वास नहीं है। पिछले दिनों जब मेरी सहेली गीता के छोटे भाई को खसरा हुआ था, तब डाक्टर ने बताया था कि इसके शरीर को नीम की पत्तियों से सहलाना लाभदायक होगा।"

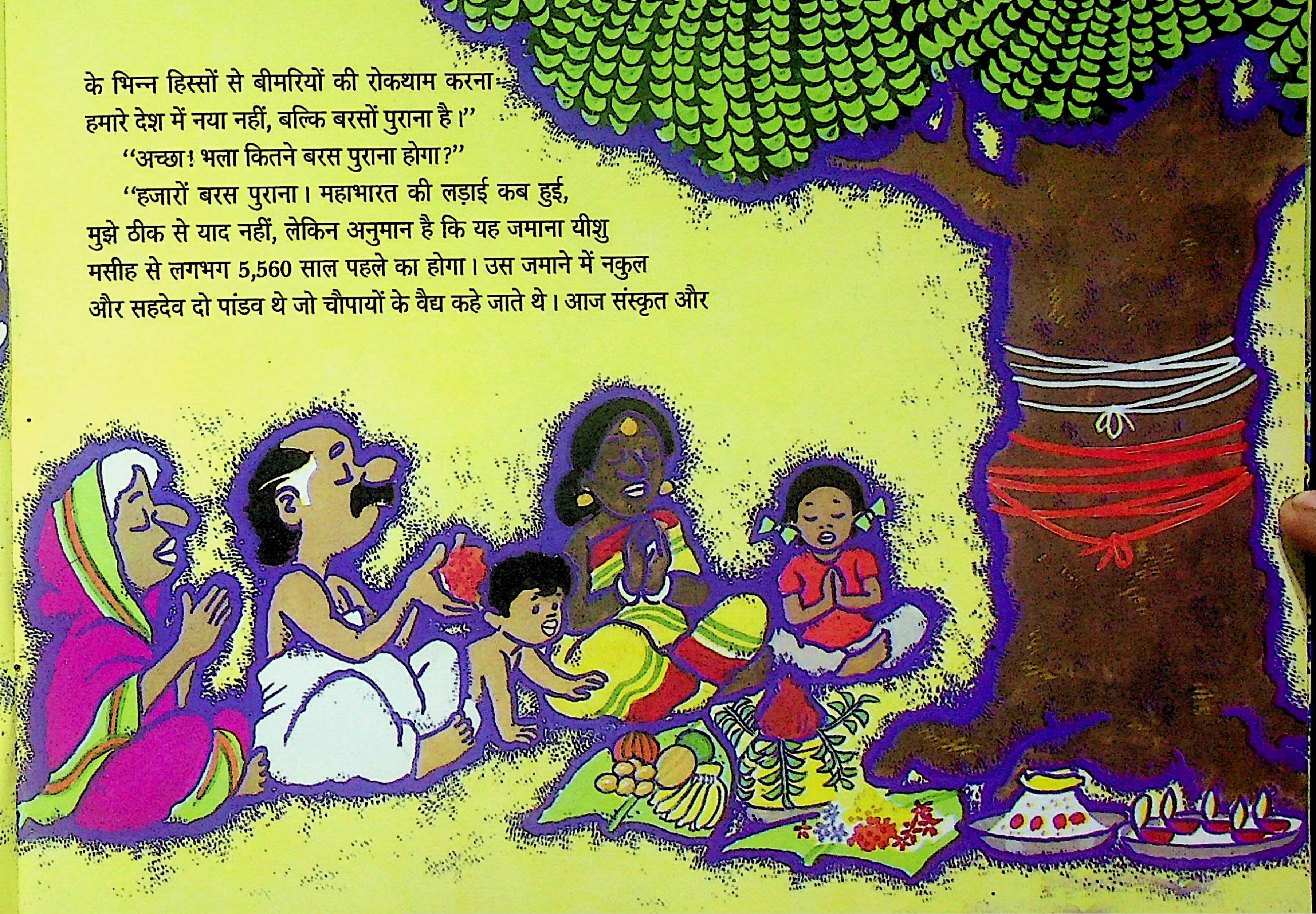
"तुम्हारी बात ठीक है। डाक्टर ने ऐसा पत्तियों के बारे में की हुई खोजों को देखकर कहा होगा। वे जानते हैं कि हमारी पत्तियों में ऐसे पदार्थ मौजूद है जो कीटाणुओं को मार डालते हैं। जिन बच्चों को खसरा या चेचक निकल आती है उनके शरीर में खुजली बहुत होती है। अगर वे खुजलाएं तो जख्म हो जाते हैं और उनके पकने का खतरा पैदा हो जाता है। ऐसी हालत में हमारी पत्तियों से दानों को सहलाना बहुत लाभदायक होता है क्योंकि उससे केवल खुजली ही दूर नहीं होती बल्कि जख्म पकने का डर भी नहीं रहता। इसी तरह हमारी पत्तियों को पीसकर एक पेस्ट तैयार किया जाता है जिसे पुल्टिस कहते हैं। इसे फोड़ों पर बांधने से वे बहुत जल्दी पककर फूट जाते हैं और रोगी को आराम मिल जाता है। यूं देखा जाए तो हमारे शरीर



के भिन्न हिस्सों से बीमरियों की रोकथाम करना हमारे देश में नया नहीं, बल्कि बरसों पुराना है।"

"अच्छा! भला कितने बरस पुराना होगा?"

"हजारों बरस पुराना। महाभारत की लड़ाई कब हुई, मुझे ठीक से याद नहीं, लेकिन अनुमान है कि यह जमाना यीशु मसीह से लगभग 5,560 साल पहले का होगा। उस जमाने में नकुल और सहदेव दो पांडव थे जो चौपायों के वैद्य कहे जाते थे। आज संस्कृत और



तमिल भाषाओं में लिखी गई पुरानी किताबें देखने से पता चलता है कि उस जमाने में ज्यादतर दवाइयों में हमारा ही प्रयोग किया जाता था। वैद्य हमें पत्तियों, निबोलियों के पाउडर या फिर तेल की शक्ल में इस्तेमाल करते थे। हमारी मदद से चौपाओं की जिन बीमारियों का इलाज हो सकता था उनमें दिक, कोढ़, जख्म, आंख और कान की तकलीफें, खांसी, अफारन, कब्ज, पेचिश, पेट के कीड़े, दूध का बुखार, यहां तक कि गले का कैंसर भी था। भारत में पुराने वैद्यों और हकीमों की दवाइओं में हमारी पत्तियों, छाल, फूलों, निबोलियों और जड़ों का प्रयोग बहुत आम था।"



नीम बाबा ने अपनी बात को जारी रखते हुए आगे कहा, "हिंदुओं की धार्मिक किताब अथर्व वेद में लिखा है कि किसी भी अचानक बीमारी में नीम बहुत लाभदायक चीज है। पुराण में इसे कोढ़ के लिए लाभकारी बताया है। मशहूर हकीमों और वैद्यों जैसे चरक सररोता, प्रीता सक्रपानी, भावा मिश्रा (1600 ईस्वी), हकीम अली जीलानी (1554-1609 ईस्वी), हकीम शरीफ खां (1725-1807 ईस्वी) और हकीम अब्दुल हलीम (1948 ईस्वी) ने अनगिनत रोगों के लिए हमें लाभकारी बताया है। इन रोगों में कोढ़, एग्जीमा, मूत्र और शक्कर आने के रोग, गठिया, पीलिया, मुंहासे और अन्य चर्म रोग शामिल हैं। हकीम अली जीलानी तो हमारे फायदों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने हमें 'मुबारक पेड़' का खिताब दे डाला।"

"सच, जिस पेड़ में इतनी ढेरों खूबियां हो उसे मुबारक पेड़ ही कहना चाहिए। नीम बाबा, तुम्हारी छाल और फूलों का इस्तेमाल तो मैंने भी खुद अपनी आंखों से देखा है। कहो तो बताऊं!"

"हां-हां, जरूर बताओ। मगर तुमने इनका इस्तेमाल कहां देख लिया?"

"खुद अपने घर में। कई साल पहले मुझे खांसी हुई थी। सब का विचार था कि यह काली खांसी है। कितने ही दिन इलाज होता रहा, मगर कोई खास फायदा नहीं हुआ। जब खांसी आती थी, तब दम घुटने लगता था। इसका इलाज मेरी दादी ने किया था। उन्होंने तुम्हारे तने से थोड़ी सी छाल निकाल ली और उसे एक मिट्टी की हांडी में बंद करके ऊपर से उपले जला दिए। सारी रात वे उपले हांडी के चारों तरफ जलते रहे। सुबह देखा तो छाल की राख बन चुकी थी। दादी ने बताया कि यह छाल का भस्म है। उन्होंने भस्म मधु में मिलाकर मुझे चटाना शुरू किया और क्या बताऊं नीम बाबा, केवल कुछ ही दिन बाद मेरी खांसी गायब हो गई।"

"और भाई वह फूलों का क्या किस्सा है?" नीम बाबा ने पूछा।

"एक बार मेरे बड़े भैया की आंखें दुखने आ गईं। उनमें बहुत जोर की खुजली होती थी और वह इतना खुजलाते थे कि आंखें लाल हो जाती थीं। उनकी पलकों के बाल तक झड़ने लगे थे। तब दादी ने एक काजल तैयार किया। तुम्हारे फूल रुई में लपेटकर एक बत्ती बनाई और उसे सरसों के तेल के चिराग में जलाकर काजल बनाया। फिर उस काजल में भुनी हुई फिटकरी और मक्खन मिलाकर एक कांसे की कटोरी में रखा और तुम्हारी डंडी से खूब घिसा। उसे भैया की आंखों में लगाया गया, जिससे न केवल आंखों की तकलीफ जाती रही बल्कि उनकी पलकें भी घनी हो गईं।"

एक छोटी बच्ची की जुबान से अपनी तारीफ सुनकर बूढ़ा बाबा बहुत खुश हुआ। उसने हंसते हुए कहा, "वाह! भाई तुम तो पूरी हकीम बन गई।"

"नीम बाबा, मुझे और ज्यादा नहीं मालूम। ये दो-एक बातें तो अपनी दादी से सुन ली थीं। अच्छा, यह तो बताओ कि जब हकीम और वैद्य तुम्हारे बारे में इतना कुछ पहले ही बता चुके थे तो फिर बाद में वैज्ञानिकों ने भला इसमें क्या बढ़ा दिया होगा?"

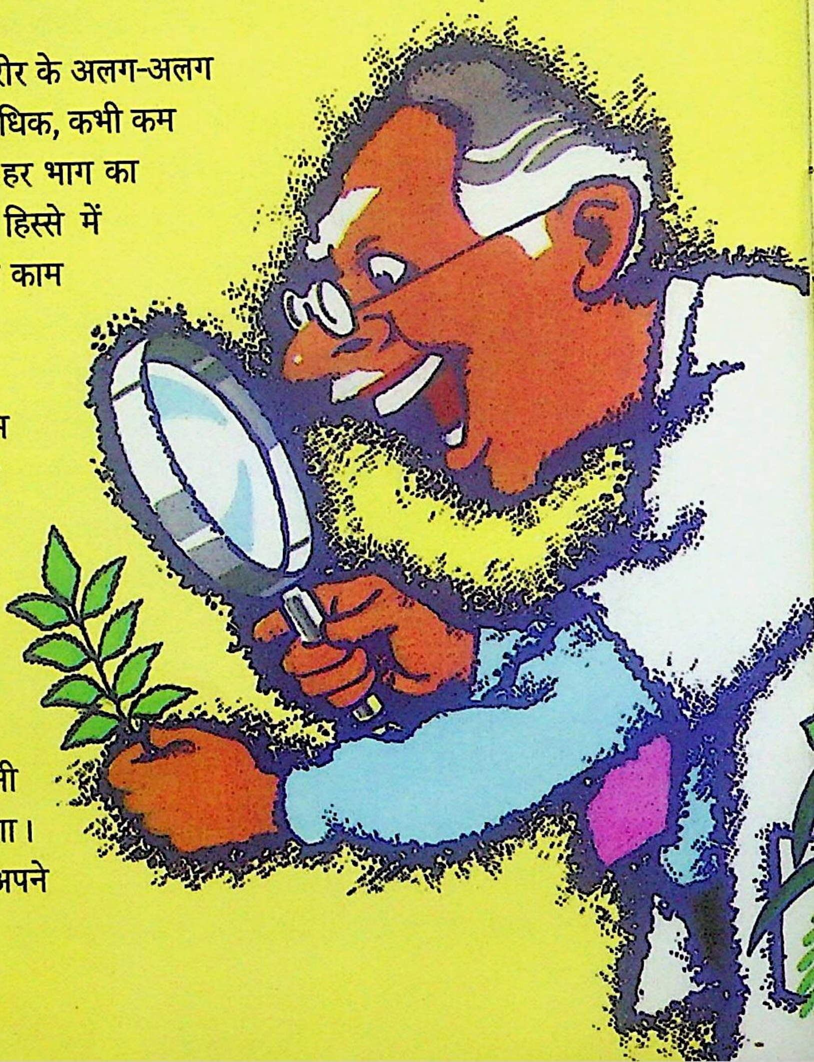
"देखो बेटी! हकीम और वैद्य तो अपने अनुभव की रोशनी में हमारे शरीर के अलग-अलग भागों को अलग-अलग रोगों के लिए प्रयोग में ला रहे थे और उनसे कभी अधिक, कभी कम लाभ भी हो रहा था, लेकिन जब वैज्ञानिक मैदान में आए तो उन्होंने मेरे हर भाग का रासायनिक अध्ययन करना शुरू किया। उन्होंने पता लगाया कि हर हिस्से में कौन-कौन से पदार्थ कितनी मात्रा में मौजूद हैं और प्रत्येक का क्या खास काम है।"

"इससे आखिर क्या लाभ हुआ होगा?"

"विशेष भाग का विशेष रोग के लिए प्रयोग ही इसका सबसे बड़ा लाभ था। फर्ज करो हमारी नई कोंपलें मनुष्य के खून में शक्कर को बढ़ने से रोकती हैं, इसलिए इस रोग के लिए केवल हमारी कोंपले ही इस्तेमाल की जायेंगी, दूसरे भाग नहीं।"

"नीम बाबा, इसका मलतब यह हुआ कि प्रशंसा तो उन लोगों की होनी चाहिए जिन्होंने पहले पहल तुम्हारी खूबियों की जानकारी प्राप्त की थी।"

"हां यह तो है, लेकिन बाद में जब वैज्ञानिकों ने अध्ययन द्वारा किसी बात को साबित कर दिया, तब हर भाग का ठीक-ठीक इस्तेमाल होने लगा। इंसानों को कुछ ऐसे अनुभव भी हुए जिनकी मदद से बाद में वैज्ञनिकों ने अपने दुश्मन रोगों की रोकथाम के तरीके भी मालूम कर लिए।"



"भला वे कौन से अनुभव थे, कुछ उनके बारे में भी बताओ।" अंबर ने कहा।

यह सुनकर नीम बाबा मुस्कराया और बोला, "बेटी, मुझे तुमसे बातें करके सचमुच बहुत खुशी हो रही है। इतनी छोटी सी आयु में इतनी बड़ी-बड़ी बातों में तुम्हारी दिलचस्पी बताती है कि खुदा ने चाहा तो तुम बड़ी होकर जरूर एक महान वैज्ञानिक बनोगी। अब मैं कुछ और अभ्यासों के बारे में बताने से पहले यह जानना चाहता हूं कि क्या तुमने कभी टिड्डियां देखी हैं?"

"नीम बाबा, मैंने टिड्डियां देखी तो कभी नहीं, हां अपनी मैडम से उनके बारे में बहुत कुछ सुना है और उनके चित्र भी देखे हैं। टिड्डियां कीड़ों की एक किस्म हैं। वे झुंड बनाकर रहती हैं। ये झुंड टिड्डी दल कहलाते हैं। वे जिस खेत में उतरती हैं, वहां एक तिनका भी नहीं छोड़तीं। एक जमाना था जब वे इंसानों के काबू में नहीं थीं, तब उनके हमलों से अकाल तक पड़ जाते थे।"



"शाबास बेटी! तुम तो टिड्डियों को बहुत अच्छी तरह जानती हो। सन् 1888-94 के दौरान अल्जीरिया के एक वैज्ञानिक ने देखा कि जब कभी टिड्डी दल आता है तो टिड्डियां हमारे पेड़ों से कतराकर निकल जाती हैं। इसके बाद सन् 1913 में ग्रिस्टोफ और मान ने और सन् 1927 में बरन ने भी देखा कि वे हमारी पत्तियां नहीं खातीं। सूडान के प्रोफेसर इशमटरियर का सन् 1959 का अनुभव भी कुछ ऐसा ही था। लेकिन इन तमाम अनुभवों को अध्ययन द्वारा साबित करने वाले पहले वैज्ञानिक भारत के डा. एस. प्रधान थे जिन्होंने सन् 1962 में साबित किया कि अगर हमारी सूखी हुई निबोलियों का पाउडर पानी में मिलाकर पौधों और पेड़ों पर छिड़क दिया जाए तो टिड्डियां उन्हें नहीं खाएंगी चाहे वे भूख से मर ही क्यों न जाएं। बाद की खोज से पता चला कि मेरे बीजों में मेंलीएनट्रिओल और एजाडरखटिन नाम के दो रसायन होते हैं जो टिड्डियों को हमें खाने से रोक सकते हैं।"

"यह खोज तो सचमुच बहुत काम की लगती है।" अंबर बोली।

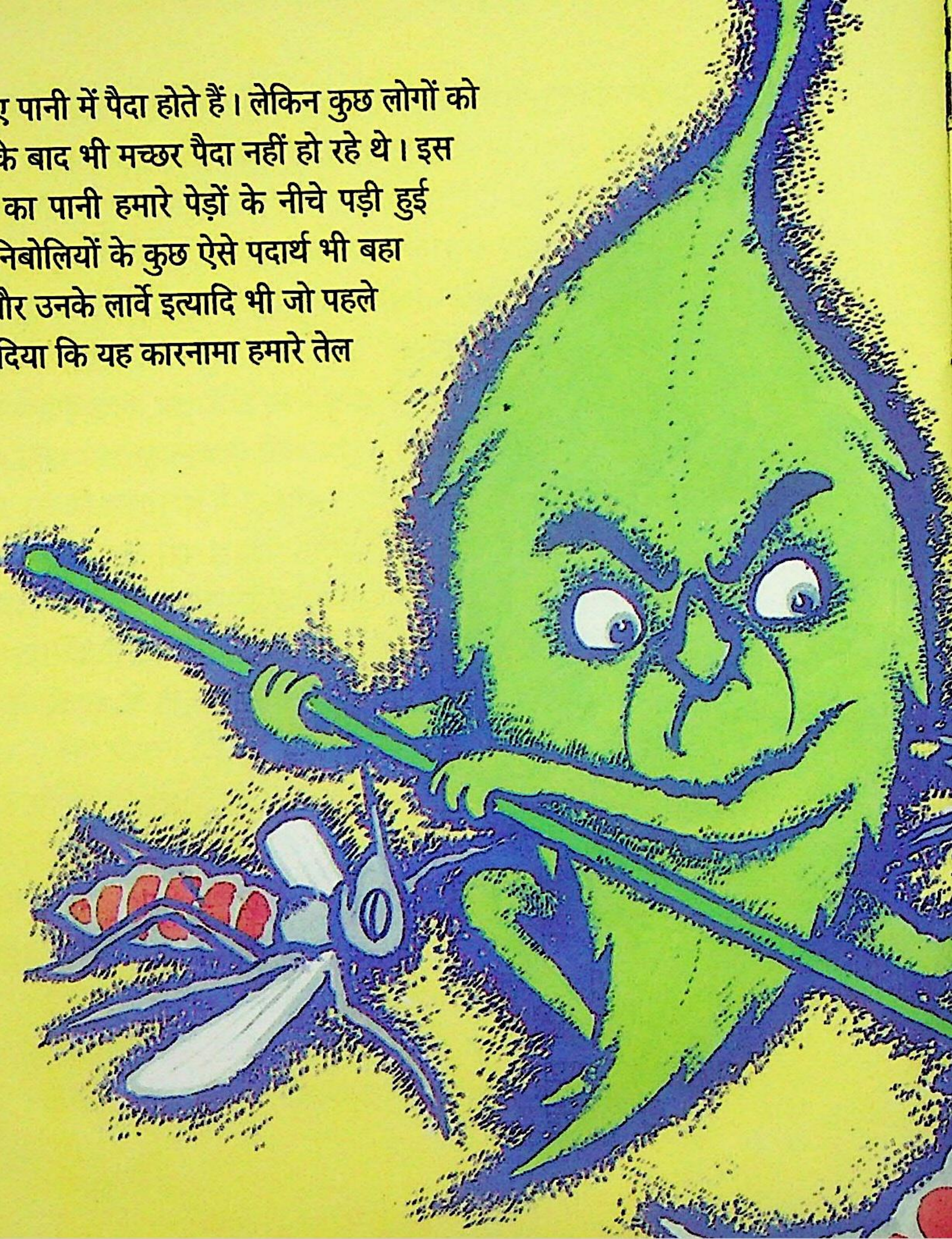
"हां,और इसके बाद से अब तक कीड़ों की लगभग ढाई सौ किस्मों पर बहुत कामयाब अध्ययन हो चुके हैं।"

"नीम बाबा, क्या वैज्ञानिकों ने इस तरह के और काम भी किए हैं?"

"हां भाई जरूर किए हैं, मगर इस वक्त मैं तुम्हें केवल कुछ गिने-चुने कारनामे ही बताऊंगा क्योंकि डरता हूं कहीं तुम ऊब न जाओ।" नीम बाबा ने मुस्कराते हुए कहा।

"सच बात तो यह है कि मुझे तुमसे बातें करने में बहुत मजा आ रहा है। कितनी अच्छी और काम की बातें बताई हैं तुमने। फिर भला इसमें ऊबने की क्या बात है! हां, तो तुम मुझे किन कारनामों के बारे में बताने वाले थे।" अंबर ने कहा।

"यह तो तुम जानती हो कि मच्छर गढ्ढों के अंदर भरे हुए पानी में पैदा होते हैं। लेकिन कुछ लोगों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कुछ गढ्ढों में पानी भरा होने के बाद भी मच्छर पैदा नहीं हो रहे थे। इस बारे में जो छानबीन की गई तो पता चला कि इन गढ्ढों का पानी हमारे पेड़ों के नीचे पड़ी हुई निबोलियों को धोता हुआ आया था, यानी वह अपने साथ निबोलियों के कुछ ऐसे पदार्थ भी बहा लाया था जिनके असर से मच्छर वहां जाने से घबरा रहे थे और उनके लार्वे इत्यादि भी जो पहले से वहां मोजूद थे मर चुके थे। बाद की खोजों ने साबित कर दिया कि यह कारनामा हमारे तेल का था जो निबोलियों में होता है। इससे ज्यादा दिलचस्प बात यह पता चली कि जहां हमारा तेल मच्छरों के लिए जहरीला था वहीं मच्छरों के दुश्मनों जैसे मेंढक और मछली के लिए बिलकुल हानिकारक नहीं था।"



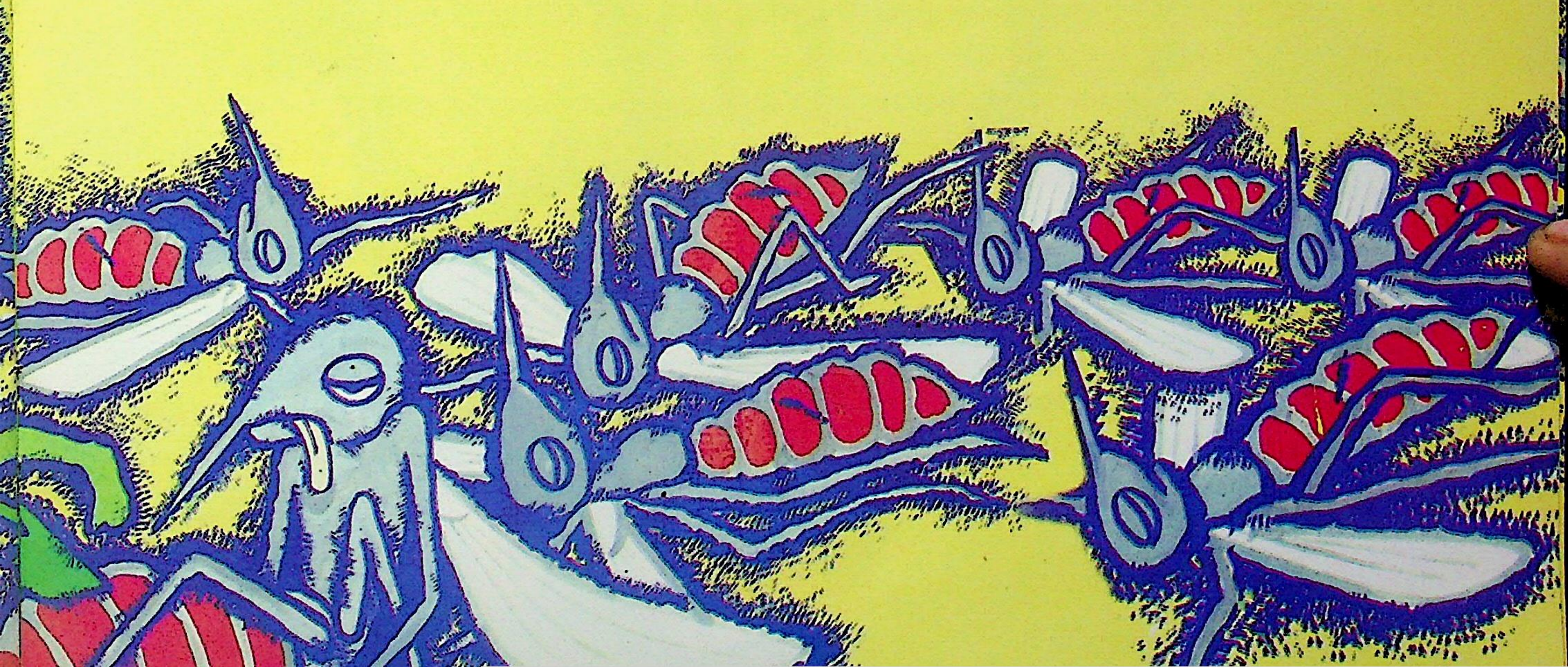
"यह तरीका तो बहुत सस्ता बल्कि यूं कहना चाहिए कि बिलकुल मुफ्त होगा।"

"बड़ी हद तक तुम्हारा सोचना ठीक है। अब देखो न एक पेड़ से लगभग तीस से सौ किलो तक निबोलियां मिल जाती हैं। तीस किलो निबोलियों से कोई छः किलो तेल और 24 किलो खली मिलती है। अगर तेल का इस्तेमाल करना हो तो इसकी बहुत कम मात्रा काफी होती है। लेकिन अगर पाउडर प्रयोग करें तो दस लीटर पानी में केवल दो मुट्ठी निबोलियां बहुत हैं। बाद की खोजों से पता चला है कि हमारे तेल के

रासायनिक भाग न केवल खाने पर पहरा बिठा देते हैं बल्कि वे कीड़ों को मारने या उनकी बढ़ोतरी रोकने में भी बहुत मदद देते हैं।"

"क्या निबोलियों की खली का भी कोई प्रयोग है।"

"हमारे बीजों यानी निबोलियों की खली से खाद बनती है जिसे धान के खेतों में डाला जाता है। यह तो तुम जानती ही हो कि धान के खेतों में पानी खड़ा रहता है जिसमें मच्छर पैदा हो जाते हैं। खली की खाद एक तरफ तो मच्छरों को पैदा होने से रोकती है और दूसरी तरफ धान की उपज भी बढ़ाती है। साथ ही धान की जड़ें दीमक के हमले से सुरक्षित रहती हैं और पौधों को खाने वाले कीड़े भी पैदा नहीं हो पाते।"





''नीम बाबा, तुम तो सचमुच कमाल के हो। एक पेड़ और उसके इतने सारे कारनामें।''

''अरे यह तो कुछ भी नहीं, हमारे तो और भी बहुत से काम हैं। लोग जब अपने अनाज को भंडार करते हैं तो हमारी निबोलियों के पाउडर या उनके तेल का प्रयोग करते हैं जिससे अनाज में कीड़ा नहीं लगता। हमारी छाल से निकलने वाला पदार्थ टेनिन चमड़े के उद्योग में काम आता है। तेल क्योंकि कीटाणुनाशक है इसलिए उससे साबुन बनाया जाता है। तेल का एक रसायन निबेडीन है जिससे टूथपेस्ट बनता है जो मसूड़ों के लिए बहुत लाभकारी है। हमारी लकड़ी से जो दरवाजे, अलमारियां और संदूक बनाए जाते हैं वे दीमक जैसे कीटों से सुरक्षित रहते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि हमारे अंदर से आक्सीजन की अधिक मात्रा निकलती है जिसके कारण वातावरण को साफ करने में भी हमारा बड़ा हाथ हैं।''

नीम बाबा ने रुककर जरा सांस ली और आगे कहा, ''अंबर बेटी, यह तो कुछ मुख्य कारनामें थे जो मैंने तुम्हें सुनाए। अभी तो बहुत बाकी हैं और न जाने कितने अभी मेरे अंदर छिपे हुए हैं जो तुम्हारे बड़े होने की प्रतीक्षा कर रहे हैं ताकि उनकी खोज के आगे तुम्हारा नाम लिखा जाए।''

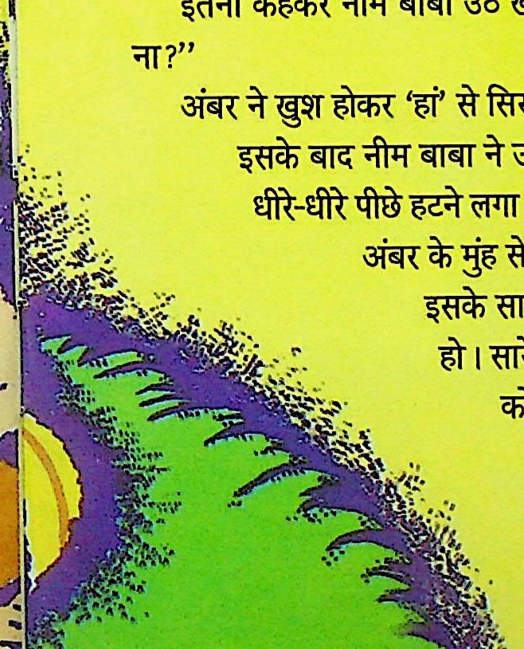
इतना कहकर नीम बाबा उठ खड़ा हुआ। उसने अंबर के सिर पर प्यार से हाथ फेरा और कहा, ''क्यों बेटी, अपना नाम लिखवाओगी ना?''

अंबर ने खुश होकर 'हां' से सिर हिला दिया।

इसके बाद नीम बाबा ने उसे लंबी आयु की आशीर्वाद दिया और खुदा हाफिज कहकर पुराने नीम की ओर बढ़ गया। वहां से वह धीरे-धीरे पीछे हटने लगा   पीछे और पीछे। यहां तक कि उसका धुंधला सा साया रह गया और अंत में वह भी गायब हो गया।

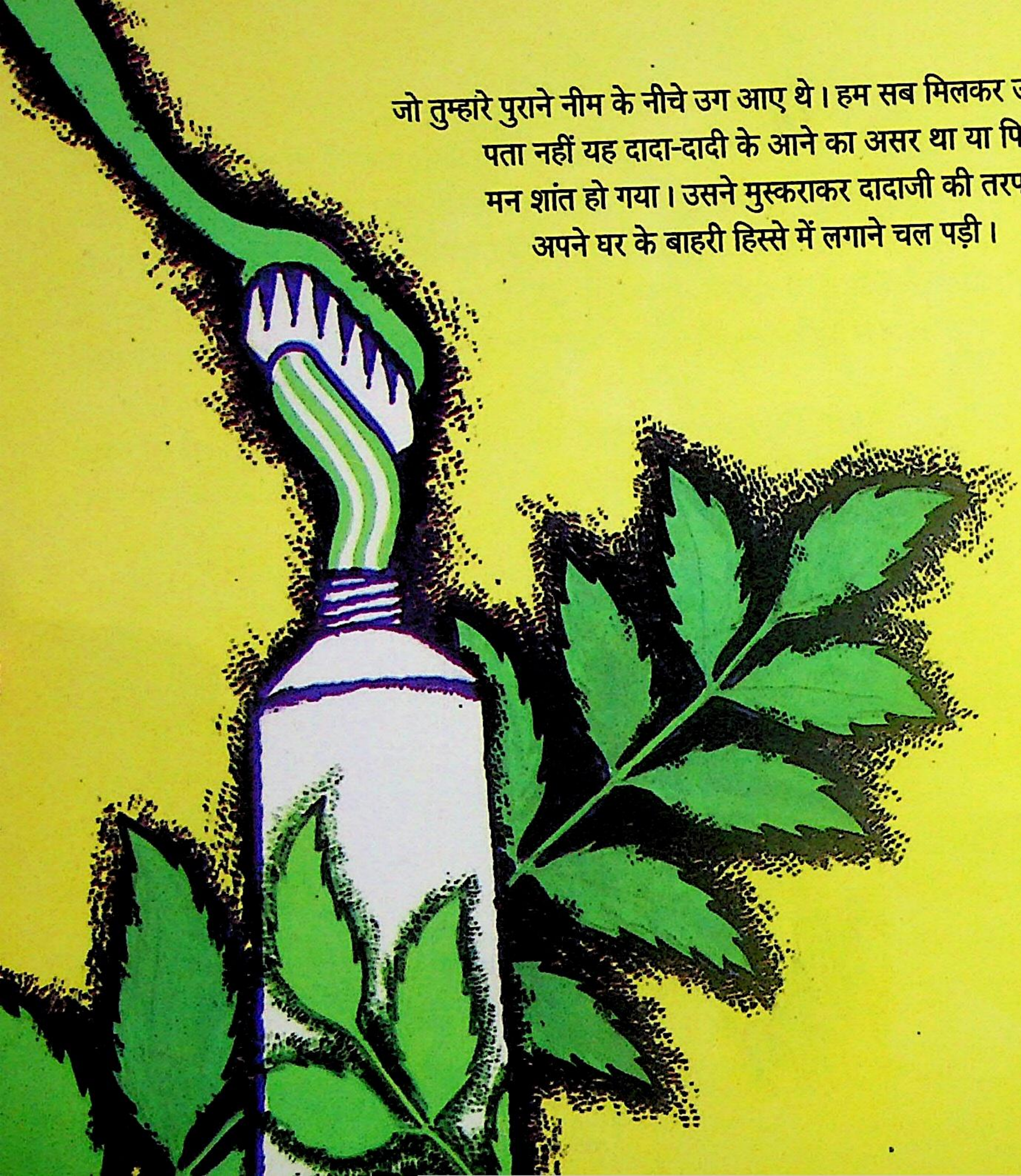
अंबर के मुंह से निकला : 'नीम बाबा, खुदा हाफिज।''

इसके साथ ही उसके कानों में उसके दादाजी की ऊंची आवाज आई, ''अंबर, अंबर! अरे तुम कहां घुसकर लेटी हो। सारे घरवाले तुम्हें ढूंढ़-ढूंढ़कर थक गए। चलो उठो अब। देखो तुम्हारी दादी भी आई हैं जो तुम्हें प्यार करने को बहुत बेचैन हैं। हमें तुम्हारा खत जरा देर से मिला। अगर हम पहले आ जाते तो तुम्हारा प्यारा नीम कभी न कटने देते। खैर अब उस बात को भूल जाओ। देखो, मैंने ये नीम के पौधे निकालकर रखे हैं



जो तुम्हारे पुराने नीम के नीचे उग आए थे। हम सब मिलकर उन्हें वहां लगाएंगे जहां तुम कहोगी।"

पता नहीं यह दादा-दादी के आने का असर था या फिर बूढ़े नीम बाबा की बातों का कि अंबर का मन शांत हो गया। उसने मुस्कराकर दादाजी की तरफ देखा, नीम का नन्हा पौधा उठाया और उसे अपने घर के बाहरी हिस्से में लगाने चल पड़ी।

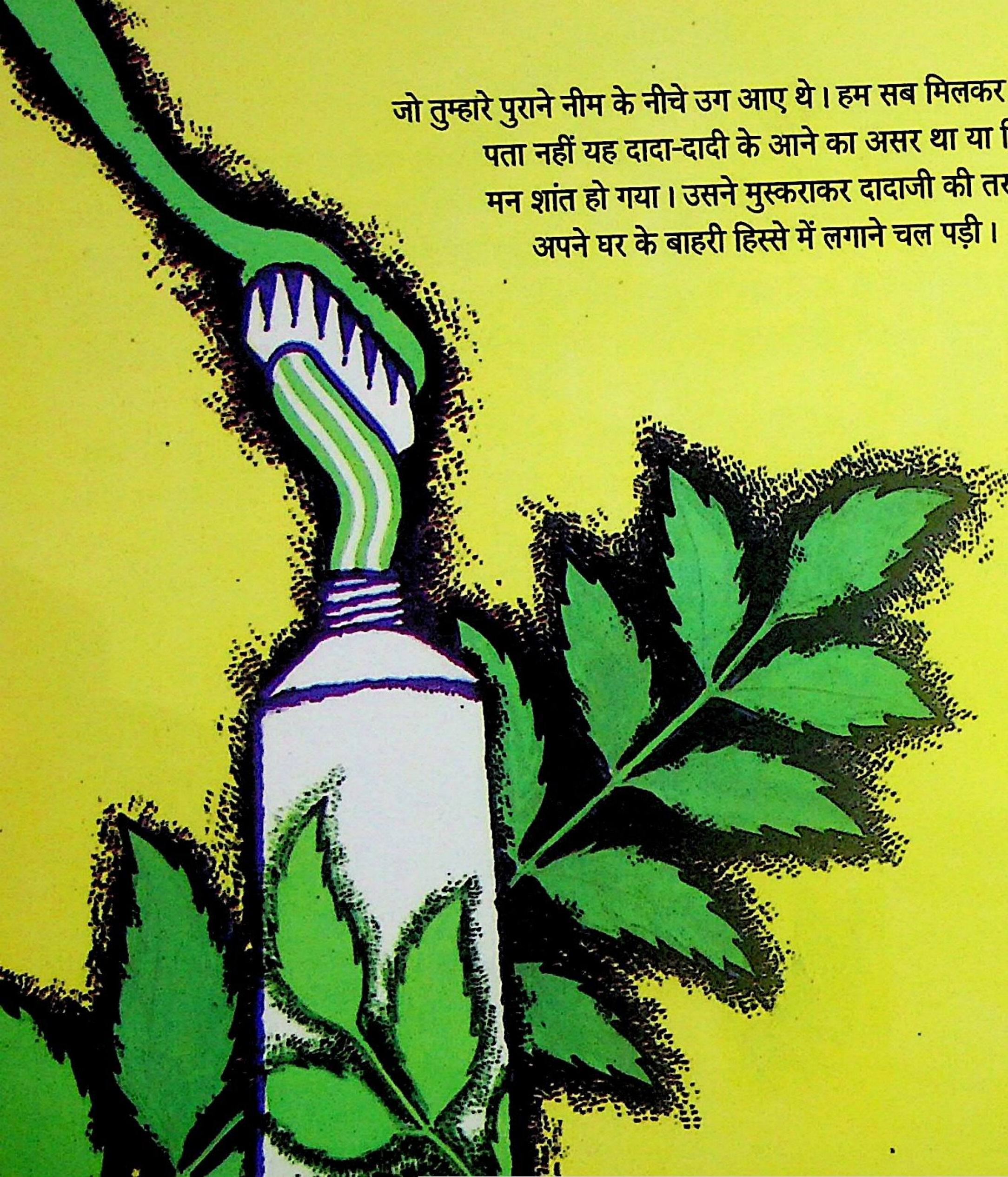




पुष्पक प्रेस [illegible] 204, डीएसआईडीसी शेड्स, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली द्वारा [illegible]

जो तुम्हारे पुराने नीम के नीचे उग आए थे। हम सब मिलकर उन्हें वहां लगाएंगे जहां तुम कहोगी।"

पता नहीं यह दादा-दादी के आने का असर था या फिर बूढ़े नीम बाबा की बातों का कि अंबर का मन शांत हो गया। उसने मुस्कराकर दादाजी की तरफ देखा, नीम का नन्हा पौधा उठाया और उसे अपने घर के बाहरी हिस्से में लगाने चल पड़ी।





पुष्पक प्रेस [illegible] 20..., डीएसआईडीसी शेड्स, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली द्वारा [illegible]



nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

₹ 35.00

ISBN 812375371-3

9788123753713

14150099